दर्शन शब्द का अर्थ तथा प्रयोजन

भारतीय परम्परा में 'दर्शन' का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है – ' दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए या जिसके द्वारा देखने की दिव्य दृष्टि प्राप्त हो, वह दर्शन है। तात्पर्य यह है कि किसी वस्तु का सारभूत तात्त्विक स्वरूप क्या है? मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? संसार का मूल स्वरूप क्या है? संसार की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश के कारण क्या हैं? चेतन क्या है? अचेतन क्या है? अज्ञान क्या है? ज्ञान क्या है? इत्यादि प्रश्नों का समाधान दर्शनशास्त्र ही करता है। मानव जीवन से सम्बन्धित सारे प्रश्नों के उत्तर देना दर्शन का प्रधान लक्षण है क्योंकि चक्षु आदि इन्द्रियों से बाह्य रूप का परिचय प्राप्त करना तो दर्शन नहीं, दृश्यावलोकन है। दार्शनिक दृश्य दृश्यावलोकन नहीं तत्त्वावलोकन है। जब ऐसे सद्विचार की शक्ति जागृत होती है तो अन्तःहृदय आलोक से भर जाता है, वही जीवन का सच्चा सुख है और जहाँ ऐसी अन्तर्दृष्टि है वहाँ जीवन का मार्ग निष्कण्ट क होता है, वहीं जीवन दर्शन के आलोक में दिव्य बन जाता है। पाश्चात्य जगत् में 'दर्शन' शब्द के लिए अथवा विचार या चिन्तनशास्त्र के लिए 'फिलोसॉफी' शब्द का प्रयोग प्रचलित है। 'फिलोसॉफी' एक ग्रीक शब्द है। इसका निर्माण दो ग्रीक शब्दों के योग से हुआ है। ये दो शब्द हैं – फिलास और सोफिया। फिलास का अर्थ है प्रेम या अनुराग और सोफिया का अर्थ है ज्ञान, प्रज्ञा या विद्या। सम्पूर्ण 'फिलोसॉफी' शब्द का अर्थ है – ज्ञान, प्रज्ञा या विद्या के प्रति अनुराग या प्रेम।

भारतीय दर्शन के अनुसार व्यक्ति अपनी विशिष्ट समझ अर्थात् ज्ञान के द्वारा अपनेआप में प्रतिष्ठित होता है और अपने भीतर एक अनिवर्चनीय आलोक का अनुभव करता है। इसी आलोक में वह अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को समझता है। उसे मृत्यु का भय मिट जाता है और अमरता का बोध हो जाता है। परमतत्त्व की सत्यानुभूति होती है। इस अनुभुति के बाद ही यथार्थ जीवन का प्रारम्भ होता है। भारतीय दर्शन का यही मूल स्वरूप है। दर्शन जीवन के इस सत्य को समझता है।